5.2 मैक्यावली : अपने समय का शिशु

मैक्यावली का जन्म 1469 में इटली के फ्लोरेंस नगर में हुआ था। वह एक संपन्न परिवार में पैदा हुआ था और उसे सार्वजनिक जीवन में जीविका अर्जित करने की दृष्टि से अच्छी शिक्षा दी गई थी। बहुत छोटी आयु में उसने फ्लोरेंस की सरकार में अपने स्तर से उच्च पद प्राप्त किया। बाद में उसे बहुत-से विदेशी राज्यों में राजनयिक दूत के रूप में भेजा गया जहाँ उसने राजनीतिक और राजनयिक मामलों का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त किया। लेकिन फ्लोरेंस गणराज्य में राजनीतिक क्रांति के कारण सन् 1513 में उसे अपने सेवाकाल में पतन का सामना करना पड़ा और यहाँ तक कि उसे एक साल के लिए जेल में भी डाल दिया गया। अपने राजनीतिक मित्रों के प्रभाव से वह जेल से इस शर्त पर छूटा कि वह राजनीतिक जीवन से संन्यास ले लेगा और सभी प्रकार की राजनीतिक गतिविधियों से अलग रहेगा। राजनीति से बलात् संयास के दौरान उसने अपनी सबसे अधिक स्मरणीय साहित्यिक रचनाओं का सृजन किया, जिनमें सबसे प्रमुख हैं "प्रिंस" और "डिसकोर्सेज़ ऑन दी फर्स्ट टेन बुक्स ऑफ टाइटस लिवियस" (Discourses on the First Ten Books of Titus Livius)। इनकी विषय-वस्तु उसके राजनीतिक विचारों की अभिव्यक्ति है और इससे उसे पर्याप्त कुख्याति मिली क्योंकि इसमें अपने राजनीतिक प्रयोजनों को सिद्ध करने के लिए "अनैतिक उपायों" का आश्रय लेने के प्रति उदासीनता दिखाई देती है और यह विश्वास प्रदर्शित किया है कि सरकार प्रायः बल और धोखाधड़ी के द्वारा अपना प्रयोजन सिद्ध करती है। उसकी रचनाओं पर मुख्य रूप से उस समय की परिस्थितियों का प्रभाव पड़ा जिसका आधा समय षड्यंत्रकारियों और महत्वाकांक्षी राजनीतिज्ञों (जिनमें स्थानीय और विदेशी भी शामिल थे) के आपसी टकराव में बीतता था। सार्वजनिक नेता जनता के हित के बजाय स्वार्थ सिद्ध करने में संलग्न थे। जनता की नैतिकता अत्यधिक निम्न स्तर पर थी। पोप की सत्ता भी इटली में राजनीतिक पतन की ओर थी। पोप इटली के एकीकरण के विरुद्ध थे। उस समय इटली पाँच राज्यों में बँटा हुआ था। ये राज्य थे - दक्षिण में नेपल्स का राज्य, उत्तर-पश्चिम में डची ऑफ मिलान, उत्तर-पूर्व में वेनिस का अभिजात्य गणराज्य; और केंद्र में फ्लोरेंस का गणराज्य तथा पोप का राज्य। कैथोलिक चर्च और मैक्यावली के समय के पादरी सारे इटली के ऊपर अपनी आध्यात्मिक शक्ति की छाया को बनाए रखना चाहते थे जिसके कारण इटली में विकास के सब काम रुक गए थे। वहाँ ऐसी कोई बड़ी शक्ति नहीं थी जो सारे इटली प्रायद्वीप को एकीकृत करके रख सके। इटलीवासियों को तानाशाही शासन के द्वारा भयंकर अपमान और अत्याचार सहन करना पड़ा और वे फ्रांसीसी, स्पेनी और जर्मनी के आक्रांताओं के शिकार बने। यूरोप के दूसरे देशों के विपरीत इटली राज्य का कोई भी शासक अपने शासनकाल में सारे इटली को समेकित नहीं रख सका। इटली की राजनैतिक स्थिति बहुत अधिक जटिल और दुखद थी। ऐसे में मैक्यावली के अत्यधिक समर्पित देशभक्त होने के कारण उसका परेशान होना स्वाभाविक था। इटली को स्वाधीन कराने और इसके प्राचीन नगरों के पुराने वैभव को लौटाने की उसे धुन समा गई थी। पूरे देश का फ्रांस और स्पेन के नमूने पर एक राष्ट्रीय राजा के अधीन एकीकरण मैक्यावली का आदर्श था। इसी विचार ने उसे प्रेरणा प्रदान की। यदि मैक्यावली के विचारों को इटली की दूषित राजनीति ने प्रभावित किया तो उसे पुनर्जागरण काल की बढ़ती हुई भावना ने प्रभावित भी किया, जिसने लोगों को पादरियों के दृष्टिकोण से भिन्न ढंग से भी स्थिति की फिर से समीक्षा करने के लिए प्रेरित किया। डनिंग के अनुसार मैक्यावली मध्य युग और आधुनिक युग की सीमा रेखा पर स्थित था। उसने धार्मिक अधीनता की राजनीति से पीछा छुड़ाकर आधुनिक युग में प्रवेश किया।

5.3 मैक्यावली के अध्ययन की पद्धतियाँ

मैक्यावली को आध्यात्मिक पूर्वजों की परंपरा में महान् यूनानी दार्शनिक अरस्तू ने अत्यधिक प्रभावित किया। मैक्यावली ने चर्च के धर्म-ग्रंथों, चर्च के पादरियों की शिक्षाओं और चर्च तथा राज्य के बीच सर्वोच्चता के विवाद को दरकिनार कर दिया। उसका विश्वास था कि मानव प्रकृति और मानवीय समस्याएँ सभी समयों और स्थानों पर लगभग एक-सी रही हैं। इसलिए उसकी दृष्टि में वर्तमान को प्रबुद्ध करने के लिए अतीत का आश्रय लेना होगा। इस प्रकार अरस्तू की तरह मैक्यावली के तरीके ऐतिहासिक थे। लेकिन यह बात यथार्थ के बजाय बाह्य रूप में अधिक सत्य है। उसे संविधान के अमूर्त सिद्धांतों की अपेक्षा सरकारी तंत्र की वास्तविक कार्य-प्रणाली की अधिक चिंता थी। वह राजनीति में यथार्थवादी था। उसकी रचनाओं में राज्य के सिद्धांत की अपेक्षा सरकार की शासन कला के सिद्धांत का प्रतिपादन किया गया है। उसके चिंतन का वास्तविक स्रोत उसके अपने समय के मनुष्यों और उनकी परिस्थितियों तथा उनके हितों में निहित था। वह अपने समय की प्रमुख परिस्थितियों का यथार्थ पर्यवेक्षक और प्रखर विश्लेषक था। इसलिए उसने राजनीतिक दर्शन के ऐसे स्वरूप और पद्धति को अपनाया, जिसने शास्त्रीय और न्यायिक आदर्शों को पूरी तरह से नज़रअंदाज कर दिया। उसने प्राचीन यूनानी और रोमन दर्शन को अपनाया क्योंकि रोमनों ने एक सुसंगठित साम्राज्य की स्थापना की, जो यूनानी नहीं कर सके थे। इससे उसे इतिहास और राजनीति में वास्तविक संबंध को समझने में मदद मिली और इतिहास से ही उसने राजनीतिक सत्यों के निष्कर्ष निकाले। उसके निष्कर्ष अनुभवाश्रित थे और सामान्य ज्ञान तथा विवेकपूर्ण राजनीतिक दूरदर्शिता पर आधारित थे। सैबाइन के अनुसार "उसने इतिहास का उपयोग ठीक उसी रूप में किया जैसा कि उसने अपने पर्यवेक्षण को बिना इतिहास के संदर्भ के निकाले गए निष्कर्ष के वर्णन या समर्थन में किया।" वह एक राजनीतिक यथार्थवादी था और उसने भी पाठकों को अभिभूत करके अरस्तू की तरह राजनीतिक तथ्यों का अम्बार लगा दिया लेकिन उसकी राजनीति संबंधी रचनाएँ राजनीतिक सिद्धांतों से उतनी संबंधित नहीं हैं जितनी कि वे एक प्रकार के राजनयिक साहित्य के बारे में हैं। डनिंग ने उसके अध्ययन को "राज्य के सिद्धांत के अध्ययन की अपेक्षा उसे सरकारी-तंत्र की कला का अध्ययन कहा।" इस प्रकार उसके वास्तविक विचारों का क्षेत्र अरस्तू की अपेक्षा बहुत कम है। लेकिन अपने सीमित क्षेत्र में मैक्यावली ने जिस प्रकार समस्याओं के संबंध में विचार-विमर्श किया, सैबाइन के शब्दों में उससे पता चलता है "उसके अंदर राजनीतिक स्थिति के सशक्त और कमज़ोर पहलुओं को समझने की प्रबल अंतर्दृष्टि थी, अपने विरोधी के संसाधनों और स्वभाव के बारे में स्पष्ट और धैर्यपूर्वक निर्णय करने का सामर्थ्य था, किसी नीति की सीमाओं के सर्वाधिक वस्तुगत आकलन की समझ थी और उसमें किसी विषय पर की जाने वाली कार्रवाई के परिणाम और घटनाओं के पीछे निहित तर्क के पूर्वानुमान लगाने की विवेकपूर्ण सामान्य बुद्धि थी।"

मैक्यावली के इन गुणों ने उसे उसके समकालीन और आधुनिक काल के राजनयिकों का प्रिय बना दिया। लेकिन उसके उक्त गुणों का संबंध इस संभावना से भी है कि कहीं लक्ष्य की अपेक्षा साधनों का महत्व अधिक न हो जाए। इसी कारण उसकी संकल्पनाओं को जिन शब्दों में व्यक्त किया जाता है, वे हैं - जिसकी लाठी उसकी भैंस (might is right), लक्ष्य (साध्य) के अनुरूप ही साधन होना चाहिए (end justifies the means), आवश्यकता किसी कानून की परवाह नहीं करती (necessity knows no law) आदि। लेकिन इन उपर्युक्त वाक्यों से जो समझा जाता है उसके विचारों का आशय उससे कहीं अधिक गहन है।

5.4 मैक्यावली के राजनीतिक विचार

मैक्यावली की दो महत्वपूर्ण रचनाओं में से "प्रिंस" में सशक्त राजतंत्र की राजनीतिक व्यवस्था का विश्लेषण है जबकि "डिसकोर्सेज़ ऑन लिवियस" में सशक्त गणराज्य व्यवस्था का विश्लेषण। पहले का मुख्य विषय एक व्यक्ति द्वारा राज्य का सफलतापूर्वक सृजन है और दूसरे का विषय स्वतंत्र नागरिकों द्वारा साम्राज्य का सृजन। इन दोनों में विचार का केंद्र राज्य के अस्तित्व में सारभूत एवं आधारभूत संबंध के बजाय राज्य में जिनके हाथ में शक्ति है उनकी कार्य-पद्धति है। उसने सब बातों को शासित के बजाय शासक के दृष्टिकोण से देखा है। उसके विचार का प्रमुख विषय संविधान की श्रेष्ठता की अपेक्षा राज्य का संरक्षण था। उसने सरकारों की कार्य-प्रणाली के बारे में लिखा जिसके द्वारा राज्य को सुदृढ़ बनाया जा सकता है और उस राजनीति का उल्लेख किया जो अपनी शक्तियों का विस्तार कर सकती है। उसने उन गलतियों की ओर भी संकेत किया जिनसे उनका पतन हो सकता है। सैबाइन के शब्दों में "राजनीति का प्रयोजन राजनीतिक शक्ति का संरक्षण और संवर्धन है। इसे वह जिस कसौटी से परखता है वह उसकी शक्ति पाने में मिली सफलता है। वह प्रायः अनैतिकता के लाभ की चर्चा करता है जिसका होशियारी से प्रयोग करके शासक अपने उद्देश्यों की पूर्ति करता है और यही बात उसकी कुख्याति का मुख्य कारण थी परंतु अधिकांशतः वह उतना अनैतिक नहीं जितना नैतिकता-निरपेक्ष है। " एक ही बात जो एक व्यक्ति के लिए करना अनैतिक हो सकता है, वही यदि ज़रूरत हो तो राज्य के हित में राजा या सम्राट द्वारा न्यायपूर्वक की जा सकती है। उसकी नैतिकता की उपेक्षा को राजनीतिक औचित्य ठहराया जा सकता है।

मैक्यावली के विचारों का आधार दो बातें थीं। पहली बात प्राचीन यूनानी मान्यता पर आधारित थी कि मानवता की सुरक्षा, कल्याण और परिष्कार के लिए राज्य सर्वोच्च प्रकार का मानवीय संघ है। इसलिए निश्चित रूप से राज्य के हित, व्यक्ति और समाज के हितों से उच्चतर हैं। दूसरी बात यह थी कि किसी भी रूप में व्यक्ति के अपने हित, विशेष रूप से भौतिक स्वार्थ राजनीतिक प्रेरणा के सभी कारकों में सबसे अधिक प्रभावशाली हैं। इसलिए किसी भी स्थिति में राज्य के शासन-तंत्र में स्वार्थपूर्ण तत्वों का धैर्यपूर्ण परिकलन और विभिन्न परस्पर-विरोधी हितों को ध्यान में रखते हुए व्यावहारिक उपायों का समझदारी से उपयोग शामिल है। इन दोनों ही बातों को उसकी दोनों पुस्तकों में अभिव्यक्त किया गया है।

5.5 सार्वभौम अहंवाद की संकल्पना (Concept of Universal Egoism)

"नैतिक उदासीनता" के सिद्धांत के अलावा एक अन्य प्रमुख सिद्धांत जो मैक्यावली के राजनीतिक दर्शन का अंग है, वह "सार्वभौम अहंवाद" का सिद्धांत है। उसे मानव प्रकृति की आवश्यक साधुता में विश्वास नहीं था। उसका मानना था सभी मनुष्य दुश्चरित्र और अनिवार्य रूप से स्वार्थी हैं। स्वार्थ और अहंवाद मानव आचरण की मुख्य प्रेरक शक्तियाँ हैं। भय मनुष्य के जीवन में एक प्रेरक और प्रबल तत्व है, जो प्रेम से अधिक शक्तिशाली है और उसमें भी प्रभावशाली प्रेरक तत्व सुरक्षा की इच्छा है क्योंकि इसके अतिरिक्त मनुष्य स्वभाव से आक्रामक और संग्रहणशील है। मनुष्य के पास जो कुछ होता है, उसे सुरक्षित रखना चाहता है और उससे भी अधिक प्राप्त करना चाहता है। इस प्रकार मनुष्य की इच्छाओं की कोई सीमा नहीं है। ऐसी स्थिति में चीज़ों की स्वाभाविक रूप से कमी हो जाती है। उसके लिए स्थायी प्रतियोगिता और संघर्ष आरंभ हो जाता है। सुरक्षा तभी संभव है जब शासक शक्तिशाली हो।

इसलिए "राजा" को भय का साकार रूप होना चाहिए। जिस राजा से प्रजा को डर होता है, यह पता होता है कि प्रजा से कैसे व्यवहार करना है तथा वह उनके जीवन और संपत्ति की सुरक्षा कर सकता है। मनुष्य हमेशा यह न जानने की गलती करता है कि कब उसे उनकी आशाओं को सीमित करना है। इसलिए इस बुराई का इलाज तभी संभव है जब वह स्वस्थ और स्थिर समाज को कायम रखने के लिए परस्पर विरोधी हितों में संतुलन स्थापित कर सके। मैक्यावली के समय में इटली में मानव प्रकृति के कृतघ्नता, अस्थिरता, धोखेबाजी और कायरता आदि अवगुण अपने बुरे प्रभावों एवं मूलभूत तत्वों के साथ विद्यमान थे। समाज के सभी क्षेत्रों में भ्रष्टाचार व्याप्त था। और सभी प्रकार की हिंसा, अनुशासन का अभाव, धन-सपंत्ति और शक्ति में अत्यधिक असमानताएँ; शांति और न्याय का अभाव, विकृत महत्वाकांक्षाओं और बेइमानी का सर्वत्र बोलबाला था। मैक्यावली के अनुसार ऐसी स्थिति को ठीक करने का केवल यही तरीका था कि निरंकुश अधिकार और पूर्ण राजतंत्र की स्थापना की जाए।

5.6 "दी प्रिंस"

"दी प्रिंस" मैक्यावली की उस समय की इटली में प्रचलित परिस्थितियों का चित्रण करने वाली रचना है। इसलिए यह कोई शास्त्रीय प्रबंध या नैतिक मूल्यों का दिग्दर्शन कराने वाला राजनीतिक दर्शन नहीं है। यह वास्तविक अर्थों में यथार्थ राजनीति की रचना है। यह शासन कला का विवरण-पत्र है। इसका स्वरूप व्यावहारिक है। यह सफलतापूर्वक शासन चलाने के लिए प्रशासन-तंत्र के आधारभूत सिद्धांतों की प्रविधि प्रदान करती है। इसका संबंध सरकार की शासन-प्रणाली से है जिसका उपयोग सफल शासक कर सकता है। "प्रिंस" का संपूर्ण तर्क दो आधार वाक्यों पर आधारित है जिन्हें मुख्य रूप से अरस्तू से लिया गया है। इनमें एक में राज्य को मानवीय संघ का सर्वोच्च रूप कहा गया है और इसे मानव कल्याण को बढ़ावा देने वाली सर्वाधिक अनिवार्य लिखत (instrument) बताया है और व्यक्ति स्वयं को राज्य में विलीन करके अपना पूर्ण विकास करता है अर्थात् वह अपने सर्वोत्कृष्ट स्वरूप को प्राप्त करता है।

इसलिए राज्य के कल्याण का विचार किसी व्यक्ति और वर्ग के कल्याण के विचार से अधिक महत्वपूर्ण है। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि व्यक्ति या सार्वजनिक कार्य में भौतिक तत्व सबसे अधिक महत्वपूर्ण प्रेरक शक्ति होते हैं। मैक्यावली राज्य को शासक से अभिन्न समझता है। इन बातों से वह इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि राजा बुद्धिमत्ता और आत्म-नियंत्रण की पूर्ण रूप से मूर्ति है और वह राजधानी को अपने गुणों और अवगुणों के अनुरूप बना देता है। राजा का यह गुण उसे सत्ता के अभिग्रहण के योग्य बना देता है। मैक्यावली के अनुसार "राजा में उन गुणों को महत्वपूर्ण समझा जाता है जो सत्ता और शक्ति को स्थापित करने में सर्वोपरि होते हैं। ये गुण उसकी प्रकार्यात्मक उत्कृष्टता में निहित होते हैं। ये गुण या अवगुण हैं - निष्ठुरता, चालाकी, धोखाधड़ी, साहस, समझदारी और इसके साथ ही अटल इच्छा-शक्ति।" असंदिग्ध रूप से यह 16वीं शताब्दी के इटली के निरंकुश शासक का आदर्शीकृत चित्र है जिसने मैक्यावली की कल्पना को प्रभावित किया।

"दी प्रिंस" के अठारहवें अध्याय में मैक्यावली के इन विचारों का विवरण मिलता है कि सफल शासक में क्या-क्या गुण होने चाहिए। सैद्धांतिक रूप में साठ-गाँठ के बजाय ईमानदारी और सत्यनिष्ठा अधिक अच्छी है लेकिन चालाकी और निपुणता प्रायः अधिक अच्छी है। कारण, चालाकी और निपुणता प्रायः अधिक उपयोगी सिद्ध होती है। राजा की सफलता के दो महत्वपूर्ण कारण हैं। ये हैं - कानून और

शारीरिक शक्ति का विवेकपूर्वक उपयोग करना। उसे अपने अंदर तार्किक और पाशविक विशेषताओं यानी "लोमड़ी" और "शेर" के गुणों का सम्मिश्रण करना चाहिए। राजा को लोमड़ी का-सा व्यवहार करना चाहिए। उसे अपने वास्तविक प्रयोजनों और प्रवृत्तियों को मिथ्याचार द्वारा छिपाकर कार्य करना चाहिए। उसे मानसिक आवेशों से मुक्त होना चाहिए और दूसरों की भावनाओं/आवेशों का लाभ उठाने के लिए तैयार एवं समर्थ होना चाहिए। उसे ठंडे दिमाग वाला और स्वार्थी, अवसरवादी होना चाहिए और बुराई का बदला बुराई से चुकाने वाला होना चाहिए। राज्य के हित में उसे हिम्मत से पाप या अपराध करने के लिए तैयार रहना चाहिए। सार्वजनिक मामलों में उसकी मनोवृत्ति की विशेषता कोमल के बजाय कठोर होनी चाहिए और राजा का जनता से रिश्ता प्यार के बजाय डर का होना चाहिए। लेकिन, सबसे ऊपर, उसे अपनी प्रजा की संपत्ति और स्त्रियों से अपने आपको दूर रखना चाहिए क्योंकि आर्थिक कारण मानव व्यवहार की मुख्य प्रेरणा होते हैं। इसलिए राजा को अपनी प्रजा को आर्थिक दृष्टि से संतुष्ट रखने के लिए यथासंभव अधिक से अधिक प्रयत्न करना चाहिए। राजा किसी षड्यंत्रकारी को चाहे मृत्युदंड दे दे लेकिन उसे उसकी संपत्ति को जब्त नहीं करना चाहिए। मैक्यावली की दृष्टि में राजतंत्र का उद्देश्य राज्य का संरक्षण था; इसलिए राजा को अपने पड़ोसी-देश को भावी शत्रु समझना चाहिए और उससे हमेशा सावधान रहना चाहिए। जो राजा चतुर होता है वह शत्रु के हमले के लिए तैयार होने से पहले उस पर हमला कर देता है। राजा को अपने उद्देश्य का पक्का और दूसरों की भावनाओं से प्रभावित नहीं होने वाला चाहिए - बस उसे केवल अपने राज्य से प्यार होना चाहिए जिसकी रक्षा उसे अपनी आत्मा की कीमत पर भी करनी चाहिए। राज्य के मामलों में उसे न्याय या अन्याय, अच्छा या बुरा, सही या गलत, दया या क्रूरता, आदर या अनादर आदि किसी से प्रभावित नहीं होना चाहिए।

मैक्यावली के अनुसार राज्य के कार्यों का निर्णय व्यक्तिपरक नैतिकता के द्वारा नहीं किया जाना चाहिए। वह राजनेताओं और सामान्य नागरिकों के लिए दोहरे मानदंड निर्धारित करता है। इस तरह मैक्यावली ने ये विचार बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किए कि एक शासक और एक राज्य क्या कुछ कर सकता है। ऐसा संभवतः सोलहवीं शताब्दी के इटली में व्याप्त भ्रष्टाचार के बीच एक शासक को जिन समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था उस परिप्रेक्ष्य में मैक्यावली की समझ के कारण है। इस प्रकार, उसके अनुसार एक राजनीतिक प्रतिभा के रूप में सफल शासक को अव्यवस्थाग्रस्त शहरों और दूसरे क्षेत्रों पर नियंत्रण के लिए सैनिक शक्ति का निर्माण करना पड़ा और इसलिए समाज को एकसूत्र में बाँधकर रखने के लिए कानून के बल के पीछे शक्ति आवश्यक है। अंततः नैतिक दायित्व का उद्भव कानून और सरकार से होता है।

शासक जहाँ कानून का निर्माता होता है वहीं वह नैतिकता का भी सृजन करता है। कारण अंततः, नैतिक दायित्वों को कानून द्वारा ही कायम रखा जा सकता है और शासक जो राज्य का सृजन करने वाला है वह न केवल कानून के दायरे से बाहर है बल्कि यदि कानून नीतिशास्त्र का निर्माण करता है तो वह नैतिकता से भी बाहर है। उसके कार्यों का निर्णय करने के लिए इसके अलावा कोई मानक निर्धारित नहीं है कि वह अपने राज्य की शक्ति को बढ़ाने और उसके स्थायीकरण के लिए राजनीतिक कार्यकुशलता का कैसे सफलतापूर्वक उपयोग करे। यदि शासक के सार्वजनिक कार्यों को व्यक्तिपरक नैतिकता के आधार पर आँका जाएगा, खास कर जिन कार्यों का संबंध आंतरिक और बाह्य सुरक्षा से है, तो यह राज्य की बरबादी का कारण होगा। इसलिए मैक्यावली के अनुसार सार्वजनिक और निजी मानक भिन्न-भिन्न होते हैं। किसी व्यक्ति के लिए अपराध करना या झूठ बोलना हमेशा गलत था लेकिन कभी-कभी शासक या राजा के द्वारा वैसा करना राज्य के हित में सही या आवश्यक था। इसी

प्रकार किसी व्यक्ति के द्वारा किसी की हत्या करना गलत है लेकिन राज्य द्वारा किसी को अपराध के लिए सजा के तौर पर मृत्युदंड देना गलत नहीं है। राज्य किसी हत्यारे को फाँसी इसलिए देता है क्योंकि वह राज्य की सुरक्षा के लिए आवश्यक है। वास्तव में, जनता का आचरण न तो अच्छा होता है और न ही बुरा। यह अच्छा होता है यदि उसके परिणाम अच्छे हों। कोई नागरिक अपने हित के लिए कार्य करता है इसलिए वह अपने कार्य के लिए जिम्मेदार है। जबकि राज्य सबके हित के लिए कार्य करता है, इसलिए आचरण के वही सिद्धांत दोनों पर लागू नहीं किए जा सकते। राज्य की अपनी कोई आचरण संहिता नहीं होती। यह एक नैतिकताहीन सत्ता है।

राज्य सबसे बड़ा मानव संघ है इसलिए उसका मनुष्य के दायित्व पर सर्वोच्च अधिकार है। मैक्यावली का यह सिद्धांत समाज के कानून को सर्वोच्च महत्व देता हे। शासक को अपने दावे को सिद्ध करने के लिए अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने के हर अवसर का लाभ उठाना चाहिए। उसे राज्य के लोगों को बड़े उद्यमों में व्यस्त रखना चाहिए, उसके सब कार्यों में बड़प्पन दिखाई देना चाहिए और उसे अपने पड़ोसी राज्यों के मामलों में खुलकर भाग लेना चाहिए। उसे कला, वाणिज्य और कृषि के कार्यों का संरक्षक बनना चाहिए और यथासंभव प्रजा पर भारस्वरूप करारोपण से बचना चाहिए। मैक्यावली की दृष्टि में उस समय राज्य की न्याय-व्यवस्था राजा के हित में थी और राज्य की सुरक्षा सर्वोच्च कानून था।

मैक्यावली के दर्शन की सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं में राजा से संबंधित विशेषता यह थी कि उसे अपनी शक्तियों और क्षेत्र के विस्तार के लिए प्रयत्न करना चाहिए। यदि वह ऐसा करने में असफल रहता है तो निश्चय ही उसका विनाश हो जाएगा। इसके लिए उसे अपने पड़ोसी राज्यों को अपना शत्रु समझना चाहिए और उसे जब पड़ोसी राज्य कमजोर हो तो उस पर आक्रमण करने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए। इस प्रयोजन के लिए उसके पास सुशिक्षित नागरिकों की सेना होनी चाहिए। सिपाहियों की एक सुप्रशिक्षित सेना राजा की शक्ति का मूलाधार है। भाड़े के सैनिकों से बचना चाहिए क्योंकि वे राज्य में अव्यवस्था का कारण हो सकते हैं। ऐसे भाड़े के गुंडे बड़ी से बड़ी तनखाह लेकर लड़ने के लिए तैयार तो होते हैं किंतु ये किसी के भी विश्वासपात्र नहीं हो सकते। ये राजा की सत्ता को हिला सकते हैं, इसलिए राजा के पास सैनिकों की स्थायी राष्ट्रीय सेना होनी चाहिए।